॥ श्रीः ॥

विद्याभवन राष्ट्रभाषा ग्रन्थमाला

१५

मन्त्र और मातृकाओं का रहस्य

(तन्त्रानुसार)

लेखक—

डॉ० शिवशङ्कर अवस्थी शास्त्री

एम० ए० (हिन्दी), एम० ए० (संस्कृत), पी-एच० डी०

योगतन्त्र विभाग, वाराणसेय संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी

(भूतपूर्व सहायक-प्राध्यापक, संस्कृत विभाग,

गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर)

चौखम्बा विद्याभवन वाराणसी-१

१९६६

विषय-सूची

स्वरूप को मातृका कहने का रहस्य—वर्णों के रंग, रूप, महिमा, आयुध, वाहन, शक्ति, ऋषि छन्दादि सम्बन्धी सूचना—तन्त्रानुसार मन्त्रों एवं मातृकाओं के रहस्योद्घाटन की प्रतिश्रुति ।

सांसारिक पदार्थों की शब्दानुविद्धता—जागरावस्था गत वाग्व्यवहार ही शब्द की स्थूल दशा है—तान्त्रिकों के मत में चेतन तत्त्व के पांच स्तर—शब्द की चार अवस्थायें—अतितुर्य तत्त्व, परब्रह्म और परमशिव की एकता—जागरावस्था गत शब्द के सघोष-वाचिक और अघोषात्मक उपांशु रूप दो भेद—स्थूल शब्द ही वैखरी वाणी है—वैखरी शब्द की व्याख्या—वैखरी के तीन भेद—वैखरी :—स्फुट क्रियाशक्ति—वैखरी अथवा रौद्री शक्ति—वैखरी वाणी में प्रकाशांश तथा विमर्शांश का निरूपण—वैखरी वाक् या बीज—वैखरी की उत्पत्ति—विराट् पुरुष अथवा वैखरी—कामकलाविलास में वैखरी का विवेचन—पञ्चदशाक्षर-राशिमयी वैखरी—भास्करराय के मत में देवी के स्थूलतर, स्थूल, सूक्ष्मतम, सूक्ष्मतर, सूक्ष्म और पर रूप—पञ्चदशाक्षरी विद्या ही सूक्ष्म रूप हैं—पञ्चदशाक्षरी विद्या के स्वरूप और उद्धार की चर्चा—पञ्चदशाक्षरी विद्या में पचास वर्णों का समाहार—आचार्य पुण्यानन्द के अनुसार वैखरी का पञ्चदशाक्षरमयी होने में सनकादि संहिताओं का प्रमाण—मध्यमावाणी अथवा वैखरी वर्णों का वासनात्मक सूक्ष्म रूप—हिरण्यगर्भ ही मध्यमा वाक् है—मध्यमा की तान्त्रिकी संज्ञा नाद—मध्यमा की उत्पत्ति— प्रकाशांश और विमर्शांश का निरूपण—मध्यमा की सङ्कटक शक्तियाँ—मध्यमा शब्द की व्युत्पत्ति :—पद्मपादाचार्य का मत—भास्करराय और पद्मपाद का नाद-विन्दु सम्बन्धी मतभेद—समन्वय—कार्यात्मक नाद-विन्दु तथा कारणात्मक नादविन्दु के सम्बन्ध में राघवभट्ट का साक्ष्य—मध्यमा के दो भेद—नव नादमय सूक्ष्म—नवर्गात्मक स्थूल—स्वच्छन्दतन्त्र में निरूपित नव नाद—धर्मशिवाचार्य की 'पद्धति' के अनुसार नादों की व्याख्या—मध्यमा के पुनः तीन भेद—'शिवदृष्टि' के अनुसार मध्यमा—व्याकरणागम और मध्यमा वाणी—ज्ञानशक्ति एवं मध्यमा वाक्—पश्यन्ती वाक् और ईश्वर तत्त्व की एकता—कार्यविन्दु और पश्यन्ती वाणी—पश्यन्ती का

मूल—विन्दु—महाविन्दु—प्रकाश और स्फुरणा—दोनों की सम्मिलित जगत्कारणता—प्रकाश 'अकार' स्फुरणा तथा 'हकार'—दोनों का सामरस्य 'अहं' अथवा पराहन्ता—योगिनीहृदय के अनुसार सृष्टिक्रम—स्फुरत्तात्मक लहरी से युक्त पारमार्थिक प्रकाश रूप अहमात्मक विन्दु—शुक्ल, रक्त और मिश्र विन्दु—हार्धकला—काम या रवि—कामकला या सृष्टि-बीज—कामकला और अहं की सर्वव्यापकता और सर्वनामता—चतुर्थ स्वर या कामकला—सेतुबन्ध के अनुसार कामकला का स्वरूप–तुरीय विन्दु, काम नामक विन्दु, विसर्गात्मक विन्दुद्वय और हार्ध कला—दीपिकाकार अमृतानन्द योगी, कामकलाविलास तथा सौन्दर्यलहरी से मतभेद—समन्वय—अकार, हकार, शिव, शक्ति—अकुल, कुण्डलिनी—अकार, हकार और नाद तत्त्व—अहन्तामय त्रिविन्दु—कामकला या त्रिकोण—त्रिविन्दु—त्रिकोण अथवा प्रणव या ओङ्कार—गायत्री-मन्त्र के चतुर्थ चरण में प्रणव का द्वैविध्य—प्रणव और कामकलाक्षर की एकता—क्रोधभट्टारक और पुष्पदन्त का मत—उमा और ओङ्कार—उमा ही कुण्डलिनी है—देवीप्रणव—अमात्र अथवा अर्द्धमात्र इन्दुकला और हैमवती उमा—पञ्चप्रणव—अकार से लेकर उन्मना पर्यन्त प्रणव की बारह कलायें—पाश जाल की अवधि और समना—मधुसूदन सरस्वती द्वारा उक्त अणु, अणुतर और अणुतम ध्वनियाँ—ओङ्कार गत अणुध्वनियाँ और बिन्दु, अर्द्धेन्दु तथा रोधिनी आदि—विन्दु आदि कलाओं के सम्बन्ध में भास्कर राय का मत—नव कलायें और नाद—कलाओं की काल गणना—उन्मना की कालहीनता—स्वच्छन्दतन्त्र का मत—उन्मना अथवा गुरुवक्त्र—उन्मना की कालात्मकता के सम्बन्ध में योगिनीहृदय और सेतुबन्ध का मत—समन्वय—उन्मना अथवा काली नामक परा शक्ति—व्याकरणागम-सम्मत कालशक्ति, स्वातन्त्र्य या परा वाणी की एकता—काल के दो भेद—अपर काल और उन्मनी शक्ति—साक्षी, चिद्रूप, परकालात्मा—काल का द्विधात्व और आचार्य पद्मपाद—लवादि-पञ्चदश-कार्यात्मक कालपर्वाभिमानिनी अपरा काल शक्ति—विन्दु आदि प्रणव कलाओं की आकृतियाँ—उन्मना से लेकर अकार पर्यन्त प्रणव कलाओं से व्याप्त ब्रह्माण्ड और पिण्डाण्ड सृष्टि—सद्योजातादि-पञ्चब्रह्म-रूप अकारादि कलाओं की अणुतर कलायें—अर्द्धेन्दु से उन्मना पर्यन्त पुष्पदन्तोक्त तुरीय धाम

वर्णमाला, स्थूलमातृका या वैखरी वाक्—वैखरी शब्द के विविध निर्वचन—सूक्ष्म मातृका अथवा मध्यमा वाक्—परा, पश्यन्ती अथवा सुसूक्ष्म मातृका—भासुरानन्दनाथ और चतुर्विध मातृका—मातृका का पर रूपः—सूतसंहिता का मत—तात्पर्यदीपिका और परमातृका—वाच्यवाचकात्मक जगत् की जननी भगवती परमातृका—मातृका या अज्ञात माता—अक्रमा मातृका—सक्रमा मातृका—ज्ञानाधारमातृका—पशुमाता मातृका—मातृका शक्ति का विलास ही विश्व है—पराहन्ता, विमर्शशक्ति, ललिता भट्टारिका अथवा मातृका—मातृका शब्द की व्युत्पत्ति—विसर्ग शक्ति और मातृका—आनन्द, सार, हृदय कालकर्षिणी आदि मातृका के पर्याय—पराशक्तिरूप प्रतिभा और मातृका—विसर्ग शक्ति और सहृदयता—कुण्डलिनी अथवा मातृका—शुद्धविद्या अथवा मातृका—वागीश्वरी अथवा मातृका—अहं और इदं का सामानाधिकरण्य अथवा शुद्धविद्या-कामकला, महात्रिपुरसुन्दरी या मातृका—गणेशग्रह नक्षत्रादि-रूप मातृका—देश-क्रम और कालक्रम की उत्पादिका मातृका—षडध्वजननी मातृका—त्रिपुरा अम्बिका अथवा मातृका—इच्छा, ज्ञान और क्रियात्मक त्रिकोण अथवा जन्माधार की हेतु मातृका—अकार तथा हकार की प्रत्याहारात्मक अहन्ता या मातृका—नववर्ग—सप्तमातृकायें—स्वरूप—अष्टमातृकायें—अष्टवर्ग और देवता—वर्ग-शक्तियों के तीन भेद—घोरादि भेदों का निरूपण—पर आदि भेदों के साथ एकता—अष्टकेश्वरी—योगिनी और ब्राह्मी आदि मातृकायें—योगिनीहृदय के अनुसार अष्टमातृकाओं का स्वरूप—मातृका वर्ण और क्रम—वर्णों के बीज और योनि दो भेद—स्वरों और व्यञ्जनों की शिव और शक्तिरूपता—मातृका क्रम ही सिद्धा और पूर्वमालिनी के नाम से ख्यात है—भिन्नयोनि मालिनी अथवा उत्तर मालिनी शक्ति—मालिनी अर्ण-क्रम—रुद्र और शक्तियों की माला अथवा मालिनी—मातृका-चक्र अथवा मातृका कलायें—मातृका वर्णों के देवी, रश्मि आदि अभिधान—वर्णों की अग्नीषोमात्मकता—बीज और स्वर—स्वर शब्द का निर्वचन—योनि और व्यञ्जन—व्यञ्जनों के दो भेद—स्पर्श और व्यापक—सौम्य, सौर और आग्नेय वर्ण—पुरुष, स्त्री और नपुंसक वर्ण—शिव और शक्तिमय स्वर—बहिर्मातृका का विवरण।

अक्षुब्ध इच्छा शक्तियों के साथ समापत्ति और षण्ढ वर्णों का जन्म—ज्ञानशक्ति, उत्पत्तिभूमि नहीं किन्तु अभिव्यक्ति-भूमि—षण्ढ वर्णों में बीज और योनित्व का अभाव—क्षोभ और क्षोभणा—अनुत्तरादि वर्ण-पञ्चक से ए, ऐ और ओ, औ की उत्पत्ति—एकारादि, क्रमशः क्रियाशक्ति के अस्फुट; स्फुट, स्फुटतर तथा स्फुटतम रूप—त्रिशूलवर्ण या औकार—विन्दु—स्वरूप का निरूपण—विन्दु, शक्तिमत्प्रधान परामर्श—'विसर्ग, शक्तिप्रधान परामर्श (वर्ण)—विन्दु और मकार में अन्तर—विमर्शात्मक विसिसृक्षा अथवा विसर्ग—विसर्ग के तीन रूप—विसर्ग के विविध नाम—वर्गों की वर्णपञ्चकता—अनुत्तर से कवर्ग का जन्म—अक्षुब्ध इच्छा शक्ति से चवर्ग की उत्पत्ति—अक्षुब्ध और क्षुब्धात्मक इच्छा शक्ति से टवर्ग और तवर्ग का उद्भव—उन्मेष से पवर्ग का उदय—पचीस वर्णों की स्पर्शता—अन्तःस्थों की उत्पत्ति का निरूपण—'अन्तःस्थ' का अभिप्राय—ऊष्मा और ऊष्म वर्ण—सकार के विविध अभिधान—षण्ड वर्णों में उत्पादकता कैसे—कूटबीज या क्षकार स्वरषट्क या सूर्य-कलायें—दीर्घ स्वर और चान्द्रकलायें—सूर्य-चन्द्र, भोक्ता और भोग्य—वर्णों में भोक्तृ-भोग्य भाव—वर्णत्रयी—पर, परापर और अपर शक्तियाँ या त्रिक-द्वादश संवित्तियाँ—योगिनी या कलायें—शब्दराशि या भैरव—शाक्त 'विसर्ग का 'अहं' में अवस्थान—अहन्ता से वर्णों का उदय और उसी में लय—मुण्डमाला या वर्णमाला।

सप्तम अध्याय : मातृका-वर्ण-रूप वाचक और उनके वाच्य :-१७२-१८७

वाचकों और वाच्यों का युगपत्प्रादुर्भाव—अनन्यापेक्षिता—शिवप्रधान वाच्य-विश्व—शक्तिप्रधान वाचक-विश्व—परात्रिंशका के अनुसार वाचक और उनके वाच्य—स्पर्श वर्ण और पचीस तत्त्व—य से क्ष तक वर्ण समुदाय तथा 'राग' से शक्ति पर्यन्त तत्त्व—स्वर वर्ण और शिव—तिथि या स्वर—तिथियाँ और प्राणचार—प्राण की स्थिति, उदय और अस्त— छत्तीस अङ्गुलात्मक प्राणवाह-शरीरगत दिन और रात्रि—प्राणापान अथवा सूर्य-चन्द्र—प्राणीय प्रहर—सायं और प्रातः सन्ध्या—प्रभात—क्षण और तुटि की परिभाषा—प्राणपथ और सोलह तुटियाँ—अपान पथ में भी सोलह तुटियाँ—मास—पन्द्रह तुटियाँ और तिथि—तिथि, स्वर, तथा